सप्तम अध्याय : उपसंहार

उपसंहार

7.1 अध्ययन का सार

सम्पूर्ण विवेच्य विषय को चार भागों व सात अध्यायों में विभाजित किया गया है । प्रथम भाग के प्रथम अध्याय में विषय को उपस्थापित किया गया है और विषय से सम्बद्ध शोध-सामग्री का सर्वेक्षण किया गया है, सर्वेक्षण को आधार बनाकर विषय की विवेचन सीमा को निर्धारित किया गया है तथा प्रस्तुत अध्ययन के महत्त्व को बताने के बाद, अध्ययन का अनुक्रम दिया गया है ।

द्वितीय अध्याय मे लेखकीय परिप्रेक्ष्य के अन्तर्गत `अज्ञेय` और उनके साहित्य का परिचय दिया गया है तथा साथ ही `अज्ञेय` के सर्जनेतर साहित्य पर भी प्रकाश डाला गया है ।

तृतीय अध्याय में सैद्धान्तिक परिप्रेक्ष्य के अन्तर्गत काव्यभाषा, कथाभाषा सम्बन्धी भारतीय आचार्यों, पाश्चात्य विद्वानों और आधुनिक हिन्दी कवि, कथाकारों, आलोचकों के दृष्टिकोण को बताया गया है । इसी अध्याय में अग्रप्रस्तुति की धारणा और अग्रप्रस्तुति के अभिकरणों के बारे में संक्षेप से बताया गया है और यह भी सिद्ध किया गया है कि भारतीय आचार्यों, पाश्चात्य विद्वानों, आधुनिक हिन्दी कवि, कथाकार, आलोचकों ने काव्यभाषा और कथाभाषा की जो विशेषताएं बताई हैं, वे सब अग्रप्रस्तुति की धारणा में समाहित हो जाती है । इसी अध्याय में अग्रप्रस्तुति की धारणा के आधार पर काव्यभाषा और कथाभाषा का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है ।

भाग दो विषय-विवेचन से सम्बन्धित है । इसे तीन अध्यायों में बाँटा गया है। इस भाग के प्रथम तथा शोध-प्रबन्ध के चतुर्थ अध्याय में अज्ञेय की काव्यभाषा का भाषा के सभी भाषिक स्तरों --- ध्वनि, शब्द, रूप, वाक्य, अर्थ, प्रोक्ति --- की दृष्टि से अग्रप्रस्तुति के अभिकरणों के आधार पर अध्ययन किया गया है ।

पंचम अध्याय में अज्ञेय की कथाभाषा का अग्रप्रस्तुति के अभिकरणों के आधार पर अध्ययन किया गया है ।

षष्ठ अध्याय में सर्वप्रथम अज्ञेय की काव्यभाषा और कथाभाषा का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है और फिर उनकी काव्यभाषा, कथाभाषा की विशेषताओं के आधार पर यह स्पष्ट किया है कि अज्ञेय कवि और कथाकार के रूप में पहले ही हैं, उनके कवि और कथाकार रूपों में से कोई भी रूप एक-दूसरे के समक्ष ऊना प्रतीत नहीं होता । यदि उन का काव्य-साहित्य एक ओर रख दिया जाए तो वह एक सफल कथाकार है, यदि उनका कथा-साहित्य एक ओर रख दिया जाए तो वह एक सफल कवि हैं अर्थात् काव्य रचना के समय उनका कथाकार का रूप बाधा नहीं बनता और कथा रचना के समय उनका कवि-रूप। इस अध्याय में अज्ञेय की काव्यभाषा और कथाभाषा के उपकरणों को भी बताया गया है और यह भी बताया गया है कि उन्होंने काव्यभाषा में कथाभाषा और कथाभाषा में काव्यभाषा का अधिग्रहण नहीं किया है ।

भाग तीन विषय समापन से सम्बन्धित है । शोध-प्रबन्ध के सप्तम अध्याय में विषय का सार, निर्णय एवं उपलब्धियाँ तथा शोध-संकेत दिए गए हैं ।

चौथे एवं अन्तिम भाग में सहायक साहित्य की सन्दर्भ-सूची वैज्ञानिक विधि से लेखकीय क्रम में अकारादि पद्धति से दी गई है ।

7.2 निर्णय एवं उपलब्धियाँ

इस अध्ययन के द्वारा यह स्पष्ट हो गया है कि काव्यभाषा और कथाभाषा में गुणात्मक रूप में कोई अन्तर नहीं होता, केवल आनुपातिक रूप में ही होता है, जो काव्यभाषा के उपकरण होते हैं वही कथाभाषा के ।

इस अध्ययन के द्वारा इस जिज्ञासा का समाधान भी मिल गया है कि अज्ञेय पहले कवि हैं या कथाकार । अज्ञेय दोनों ही रूपों में पूरी तरह सफल हैं, यह नहीं कहा जा सकता कि अज्ञेय पहले कवि हैं फिर कथाकार या पहले कथाकार फिर कवि । उनका कोई भी रूप एक-दूसरे के समक्ष बौना प्रतीत नहीं होता ।

इस अध्ययन के द्वारा यह भी स्पष्ट हो गया है कि अज्ञेय ने काव्यभाषा में न तो कथाभाषा का अभिग्रहण किया है और न ही कथाभाषा में काव्यभाषा का, क्योंकि दोनों में गुणात्मक अन्तर न होकर आनुपातिक ही होता है, इसलिए एक-दूसरे से अभिग्रहण का प्रश्न ही नहीं उठता ।

इस अध्ययन के द्वारा यह भी स्पष्ट हो गया है कि भाषा का संवेदना से अटूट सम्बन्ध होता है, भाषा के माध्यम से साहित्यकार की संवेदना को सूक्ष्म और गहराई से जाना जा सकता है । इस अध्ययन के द्वारा अज्ञेय के काव्य-साहित्य और कथा-साहित्य को अच्छी तरह समझने में सहायता मिलेगी ।

इस अध्ययन से अज्ञेय का काव्यभाषा, कथाभाषा सम्बन्धी दृष्टिकोण भी पाठकों के सामने आया है जो उनके काव्य-साहित्य और कथा-साहित्य को समझने में सहायक सिद्ध होगा।

7.3 शोध संकेत

इस अध्ययन के द्वारा कुछ ऐसे विषय सामने आए हैं जिन पर शोध हो सकता है। प्रथम प्रथम, अज्ञेय की काव्यभाषा का, अज्ञेय की कथाभाषा का ऐतिहासिक (काल-क्रमिक) दृष्टि से अध्ययन किया जा सकता है, क्योंकि ज्यों-ज्यों अज्ञेय एक के बाद एक रचना लिखते गए, त्यों-त्यों उनकी भाषा उत्कृष्ट और समृद्ध होती गई। द्वितीय, अज्ञेय के काव्य-साहित्य का, कथा-साहित्य का शैली वैज्ञानिक और इन दोनों का शैली-वैज्ञानिक दृष्टि से तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है। तृतीय, अज्ञेय के साहित्य (काव्य और कथा) का भाषा-वैज्ञानिक दृष्टि से तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।